डॉ मुश्ताक अहमद
प्रधानाचार्य, सीएम कॉलेज
दरभंगा (बिहार)
संपर्क : 09431414586

सामाजिक और आर्थिक संतुलन का त्योहार है ईद-उल-फितर

ईद की खुशी में न सिर्फ मुसलमान, बल्कि विभिन्न धर्मों के लोग शामिल होकर मुसलमानों की खुशी को दोबाला करते हैं और तमाम भेदभाव मिटता हुआ नजर आता है. चारों तरफ सामाजिक सौहार्द की फिजा कायम हो जाती है. इस तरह ईद एक मजहबी त्योहार के रूप में हमारी जिंदगी में खुशियों की धारा तेज करने के साथ-साथ समाज में आर्थिक संतुलन कायम करने और सामाजिक सरोकार को मजबूत बनाने का सबक भी सिखाता है.

रमजान मुसलमानों के लिए एक पाक व मुबारक महीना है, लेकिन यह सिर्फ मजहबी दृष्टिकोण से ही अहमियत नहीं रखता, बल्कि सामाजिक, आर्थिक संतुलन और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इस माह-ए-मुबारक का अलग महत्व है. मजहबी दृष्टिकोण से रमजान के इसी माह में इस्लाम धर्म का पाक कुर्आन शरीफ़ नाजिल हुआ. साथ ही रोज़े जैसी पाक इबादत और नमाज-ए-तरावीह भी रमजान के महीने में ही पूरे किये जाते हैं. इस पूरे महीने को तीन भागों में बांटा गया है- पहला दस दिनों का असरा रहमत का कहलाता है यानी शुरू के दस दिनों में बंदों पर अल्लाह की रहमतों की बारिश होती है. जबकि दूसरा दस दिनों का असरा मग़फेरत (माफी) का होता है. इस असरे में नेक बंदा अपने गुनाहों की जो भी माफी मांगता है, उसे अल्लाह कबूल फरमाता है. और आखिरी असरा निजात (छुटकारा) यानी जहन्नम से छुटकारे का होता है. इस तरह पूरा रमजान का महीना मुसलमानों के लिए अल्लाह की रहमतों से मालामाल होने का महीना है और जब रमजान की तमाम इबादतों को पूरा करने में कोई बंदा कामयाब हो जाता है तो उसी कामयाबी की खुशी में ईद मनाई जाती है.

ईद का शाब्दिक अर्थ ही खुशी है. ईद मनाने से पहले इस्लाम ने मुसलमानों पर जितने मजहबी शर्तें रखी हैं, यदि उन पर संजीदगी से गौर कीजिए तो पता चलेगा कि यह महीना मुसलमानों के लिए सामाजिक सरोकार से जुड़ने का पैगाम भी देता है. रमजान में रोजे के इफ्तार का दृश्य ही सामाजिक समरसता का प्रमाण होता है कि एक ही दस्तरखान पर राजा और रंक सभी एक साथ मिल कर इफ्तार करते हैं. बगैर किसी भेदभाव के एक ही सफ में नमाज अदा करते हैं, जैसा कि अल्लामा इकबाल ने फरमाया है :-

एक ही सफ में खड़े हो गये महमूद व अयाज़
न कोई बंदा रहा और न कोई बंदा नवाज

ईद की नमाज से पहले हर एक साहिबे निसाब (आर्थिक दृष्टि से संपन्न) मुसलमानों पर फर्ज है कि वह फितरा की राशि अवश्य ही उन लोगों के बीच बांट दें, जो मुहताज व आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं. फितरा के संबंध में जो हिदायत दी गयी हैं, उसके पीछे पैगाम छुपा है कि समाज में जो धनवान व्यक्ति हैं, वह न चाहते हुए भी मजहबी फरमान की वजह से फितरा की राशि गरीबों में तकसीम करेंगे, ताकि उस राशि से गरीब और मुहताज तबका भी ईद की खुशियां हासिल कर सकें.

सब अल्लाह के बंदे हैं

महानुभावो! आप सब जानते हैं कि इस्लाम का जन्म ही इंसानियत की रक्षा के लिए हुआ, क्योंकि कुरान की पहली आयत की शुरुआत ही कहती है- ''अलहमदुलिल्लाहे रब्बिल आलमीन'' अर्थात् तारीफ उसकी, जो सारे जहान का रब है. जाहिर है इस्लाम ने यह नहीं कहा कि अल्लाह सिर्फ मुसलमानों का रब है. जब पूरी दुनिया का रब है, तो दुनिया में जितने भी मनुष्य हैं, सब अल्लाह के बंदे हैं, फिर इस्लाम के संबंध में इतनी गलतफहमियां क्यों हैं? इसमें सिर्फ उनका कुसूर नहीं है, जिन्होंने इस्लाम को नहीं समझा, बल्कि कुसूर तो उनका है, जिन्होंने इस्लाम को समझा है, लेकिन अपने आचरण से औरों को इस्लाम से अवगत नहीं कराया. यह बात सिर्फ इस्लाम धर्म पर ही लाजिम नहीं, बल्कि अन्य धर्मों के लोगों ने भी अपने-अपने धर्मों की तकाजों से अलग हटकर चलने की कोशिश की है. इस्लाम धर्म के पैगम्बर मोहम्मद (स0) ने जब यह कहा था कि ''उस वक्त तक तुम पर खाना हराम है जब तक तुम्हारा पड़ोसी भूखा है''. सनद रहे कि मोहम्मद (स0) ने शब्द 'पड़ोसी' कहा है, मुसलमान नहीं. लेकिन आज का मुसलमान क्या इस हदीस पर पूरा उतर रहा है? यदि पूरा उतर रहा होता, तो शायद वह अपने पड़ोसी की नजर में गैर न समझा जाता और न अन्य धर्मों के मानने वालों के जेहन में अपने प्रति कई तरह के सवालों का प्रतीक बनता! जरूरत इस बात की है कि मजहब ने जो सबक सिखाये हैं, उसे जीवन जीने का उसूल समझा जाये और यदि हर धर्म का व्यक्ति अपने-अपने धर्म के तकाजों को पूरा करने लगे, तो फिर मानवता के लिए खतरा क्योंकर हो सकता है? फिर भारत का सनातन धर्म तो पूरी दुनिया को एक परिवार मानता है. उसमें जाति, धर्म या पंथ में विभेद कहां है.

॥ धर्म-कर्म ॥

किसे ज़कात देना बताया गया फर्ज

रमजान के पवित्र महीने में जकात और फितरा अल्लाह की राह में खर्च करने का सबसे अहम व आसान रास्ता है. रमजान में ढाई फीसदी जकात देकर मुसलमान अपनी जान-माल की हिफाजत कर सकता है. जकात के रूप में मिस्कीनों को देना हर साहिबे निसाब मुसलमान पर फर्ज है. जानिए कि जकात किन-किन लोगों को देना वाजिब बताया गया है.

जिन लोगों को ज़कात का माल देना जायज़ है, वे सात हैं -
1. फक़ीर 2. मिस्कीन 3. कर्ज़दार 4. मुसाफिर 5. आमिल 6. मुकातिब 7. फी सबीलिल्लाह.

फक़ीर	वह शख्स है, जिसके पास कुछ माल है, मगर निसाब से कम है, मगर उसका सवाल करके मांगना नाजायज़ है.
मिस्कीन	वह शख्स है, जिसके पास कुछ न हो, न खाने को ग़ल्ला और न पहनने को कपड़े हों, मिस्कीन को सवाल करना भी हलाल है.
क़र्ज़दार	वह शख्स है, जिसके जिम्मे कर्ज़ हो, उसे जकात देना वाजिब बताया गया है.
मुसाफ़िर	वह शख्स है, जिसके पास सफर की हाल में माल न रहा हो, उसे ज़कात देना जायज़ है.
आमिल	वह शख्स है, जिसको बादशाह इस्लाम ने ज़कात वसूल करने के लिए मुक़र्रर किया हो.
मुकातिब	वह गुलाम या नौकर है, जो अपने मालिक को माल देकर आज़ाद होना चाहे.
फ़ी सबीलिल्लाह	यानी राहे खुदा में खर्च करना. इसकी कई सूरतें हैं, जैसे कोई तालिबे इल्म है, जो इल्मेदीन पढ़ता है, उसे भी ज़कात दे सकते हैं.

॥ सुवचन ॥

किसी मूर्ख व्यक्ति की पहचान यही है कि वह हमेशा खुद को बुद्धिमान समझता है, जबकि एक बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा खुद को मूर्ख समझता है.
- विलियम शेक्सपियर

जीवन में किसी का भला करोगे, तो आपका लाभ होगा, क्योंकि भला का उल्टा लाभ होता है. जीवन में किसी पर दया करोगे तो लोग आपको याद रखेंगे, क्योंकि दया का उल्टा याद होता है.
- चाणक्य

दूसरों के दोष पर ध्यान देते समय हम स्वयं बहुत भले बन जाते हैं, परंतु जब हम अपने दोषों पर ध्यान देंगे, तो अपने आपको कुटिल और कामी पायेंगे.
- महात्मा गांधी

॥ वास्तु टिप्स ॥

माथे के बायें हिस्से पर तिल बनाता है खर्चीला

शरीर के हर हिस्से पर मौजूद तिल का महत्व अलग है. ज्योतिष और समुद्र शास्त्र के जानकारों के अनुसार किसी भी व्यक्ति के शरीर पर 12 से ज्यादा तिल होना अच्छा नहीं माना जाता, लेकिन व्यक्ति के शरीर पर 12 से कम तिल हो, तो यह शुभ फलदायक है. जहां पुरुषों के शरीर पर दाहिनी ओर तिल होना शुभ और लाभकारी माना जाता है, वहीं महिलाओं के शरीर के बायें हिस्से पर तिल होने को शुभ और लाभकारी मानते हैं. चेहरे के विभिन्न हिस्सों पर तिल होने का भी अपना अलग-अलग महत्व है. जिन लोगों के माथे के बायें हिस्से में तिल होता है, वे खर्चीली प्रवृत्ति के लोग होते हैं. उन्हें अधिक धन खर्च करने की आदत होती है. वहीं जिन लोगों के माथे के दाहिने हिस्से में तिल होता है, उनकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होती है. जिन लोगों के माथे के बीच में तिल होता है उन्हें शास्त्रों में भाग्यशाली माना गया है.

॥ ज्योतिष ॥

पंचक में क्यों नहीं किये जाते हैं शुभ कार्य

श्रीपति त्रिपाठी, ज्योतिषाचार्य

पंचक को हिंदू पंचाग के अनुसार बहुत अशुभ काल माना जाता है. ऐसी मान्यता है कि इस दौरान शुभ कार्य से बचना चाहिए और कुछ उपाय करके इसके बुरे प्रभाव को दूर करना चाहिए, ताकि बड़ी समस्या से बचा जा सके. धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तर भाद्रपद एवं रेवती कुछ ऐसे ही अशुभ नक्षत्रों के नाम हैं, जिन्हें काफी अशुभ माना जाता है. धनिष्ठा के प्रारंभ से लेकर रेवती के अंत तक का समय काफी अशुभ माना गया है, इसे पंचक कहा जाता है. ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इन पांच दिनों में न तो दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करनी चाहिए, न घर की छत या खाट बनवानी चाहिए और न ही ईंधन का सामान इकट्ठा करना चाहिए.

ज्योतिषशास्त्रियों के अनुसार पंचक भी अलग-अलग प्रकार के होते हैं, जैसे- रोग पंचक, राज पंचक, अग्नि पंचक, मृत्यु पंचक, चोर पंचक.

रोग पंचक : अगर पंचक का प्रारंभ रविवार से हो रहा होता है, तो यह रोग पंचक कहा जाता है. इसके प्रभाव में आकर व्यक्ति शारीरिक और मानसिक परेशानियों का सामना करता है. इस दौरान किसी भी प्रकार का शुभ कार्य निषेध माना गया है. मांगलिक कार्यों के लिए यह पांच दिन अनुपयुक्त हैं.

राज पंचक : सोमवार से शुरू हुआ पंचक राज पंचक होता है, यह पंचक काफी शुभ माना जाता है. इस दौरान सरकारी कार्यों में सफलता हासिल होती है और बिना किसी बाधा के संपत्ति से जुड़े मामलों का निदान होता है.

ज्योतिष के अनुसार पंचक काल के दौरान शुभ कार्य करने से बचना चाहिए, ताकि जीवन में कोई बड़ी समस्या न आये.

अग्नि पंचक : मंगलवार से शुरू हुए पंचक के दौरान आग लगने का भय रहता है. इसे शुभ नहीं माना जाता. इस दौरान औजारों की खरीददारी, निर्माण या मशीनरी का कार्य नहीं करना चाहिए. जबकि इस दौरान कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामलों में आगे बढ़ने से सफलता मिलने की संभावना होती है.

मृत्यु पंचक : शनिवार से शुरू हुआ पंचक सबसे ज्यादा घातक होता है, जिसे मृत्यु पंचक कहते हैं. इस दिन किसी कार्य की शुरुआत करने से व्यक्ति को मृत्यु जितनी घातक परेशानियों से गुजरना पड़ता है. चोट लगने, दुर्घटना होने और मृत्यु तक का भय रहता है.

चोर पंचक : शुक्रवार से शुरू हुए पंचक को चोर पंचक कहते हैं. इस दौरान यात्रा नहीं करनी चाहिए. धन से जुड़ा कोई कार्य भी पूर्णतः निषेध माना गया है.

अगर पंचक बुधवार या बृहस्पतिवार से प्रारंभ हो रहे हैं, तो उन्हें ज्यादा अशुभ नहीं मानते. पंचक के मुख्य निषेध कर्मों को छोड़कर कोई भी कार्य कर सकते है.

खास बात : विद्वानों के अनुसार पंचक के समय चारपाई नहीं बनवानी चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से कोई बड़ा संकट आ सकता है. धनिष्ठा नक्षत्र के दौरान आग से जुड़े कोई भी कार्य करने से बचना चाहिए, इससे आग लगने का खतरा रहता है.

॥ व्रत-त्योहार- ॥

सुहागिन स्त्रियों के लिए बेहद खास है वट सावित्री व्रत

हिंदू धर्म में वट सावित्री व्रत सुहागिन स्त्रियों के लिए बेहद खास है. मान्यता है कि इस व्रत को रखने से पति पर आये संकट चले जाते हैं और आयु लंबी हो जाती है. यही नहीं, अगर दांपत्य जीवन में कोई परेशानी चल रही हो तो वह भी इस व्रत के प्रताप से दूर हो जाते हैं. सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और सुखद वैवाहिक जीवन की कामना करते हुए इस दिन वट यानी कि बरगद के पेड़ के नीचे पूजा-अर्चना करती हैं. इस दिन सावित्री और सत्यवान की कथा सुनने का विधान है. मान्यता है कि इस कथा को सुनने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है. पौराणिक कथा के अनुसार सावित्री मृत्यु के देवता यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस ले आयी थी.

वट सावित्री व्रत कब है : 'स्कंद' और 'भविष्योत्तर' पुराण' के अनुसार वट सावित्री का व्रत हिंदू कैलेंडर की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा तिथि पर करने का विधान है. वहीं, 'निर्णयामृत' इत्यादि ग्रंथों के अनुसार वट सावित्री व्रत पूजा ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की अमावस्या पर की जाती है. उत्तर भारत में यह व्रत ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को ही किया जाता है. ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार यह व्रत हर साल मई या जून महीने में आता है. इस बार व्रत 3 जून को है.

व्रत का महत्व : वट का मतलब होता है बरगद का पेड़. बरगद में कई जटाएं निकली होती हैं. कहते हैं कि इसी पेड़ के नीचे सावित्री ने अपने पति को यमराज से वापस पाया था. सावित्री को देवी का रूप माना जाता है. हिंदू पुराण में बरगद के पेड़े में ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास बताया जाता है. मान्यता के अनुसार ब्रह्मा वृक्ष की जड़ में, विष्णु इसके तने में और शिव ऊपरी भाग में रहते हैं. इसलिए माना जाता है कि इस पेड़ के नीचे बैठकर पूजा करने से हर मनोकामना पूरी होती है. वट सावित्री व्रत करने और इसकी कथा सुनने से उपासक के वैवाहिक जीवन या जीवन साथी की आयु पर किसी प्रकार का कोई संकट आया भी हो, तो टल जाता है.

तिथि और शुभ मुहूर्त :
अमावस्या तिथि प्रारंभ : 02 जून, 2019 को शाम 04:39 मिनट से
अमावस्या तिथि समाप्त : 03 जून, 2019 को दोपहर 03:31 मिनट तक

राशिफल

डॉ एनके बेरा

मेष सरकारी सेवा से जुड़े जातकों को अनुकूल परिस्थितियों का लाभ मिलेगा. जमीन-जायदाद से संबंधित काम बनेंगे. दोस्तों से संबंधों में सुधार व मधुरता आयेगी.

वृष महत्वपूर्ण कामों में रुकावटें बनी रहेंगी, शत्रु हावी हो सकते हैं. आर्थिक परेशानी दूर होगी. विशिष्टजनों के सहयोग से विवादास्पद मामलें दूर होंगे.

मिथुन घर में अविवाहित बच्चों के रिश्ते आयेंगे. समाज में लोग आपका फायदा उयेंगे. चलते काम में बाधा हो सकती है. उदर रोग, बुखार आदि से परेशान हो सकते हैं.

कर्क राजकीय पक्ष से संबंधित काम होने की संभावना. राजनीति के क्षेत्र में ऊंचाई हासिल करेंगे .शुभ समाचार की प्राप्ति होगी. बच्चों की तरफ से खुशखबरी प्राप्त होगी.

सिंह आज का दिन सुख-शांति से व्यतीत होगा .घर में खुशी का माहौल रहेगा. व्यावहारिक कुशलता एवं बौद्धिक चतुरता से अनेक समस्याओं का समाधान निकलेगा.

कन्या चिरपरिचित लोगों से मुलाकात होगी. अनायास धन व कार्य की प्राप्ति होगी. अपनी सूझबूझ से सारे कार्य बना लेंगे. आर्थिक स्थिति अनुकूल सुदृढ़ होगी.

तुला नौकरी में नया पद मिलने की संभावना है. महत्वपूर्ण कार्य में सफलता. महिला वर्ग को संपर्क से लाभ होगा. छात्रों के लिए समय उत्साहवर्धक रहेगा.

वृश्चिक संतान पक्ष की तरफ से कोई शुभ समाचार मिलेगा. मान-यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. विवाहादि शुभ कार्य में व्यस्त रहेंगे. मनपसंद उपहार मिलेंगे.

धनु सफलता आपके दरवाजे पर दस्तक देगी. सरकारी कार्य में प्रगति होगी. हर्षदायक समाचारों की प्राप्ति. धनलाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा.

मकर मन उच्चाभिलाषी रहेगा. रोजगार संबंधीं समस्यायें हल होंगी. नये कार्य की योजना सफल होगी. व्यापार में अपेक्षित सफलता मिलेगी.

कुंभ आपको कोई नया कार्य या नया प्रोजेक्ट प्राप्त हो सकता है. घर में कोई शुभ कार्य संपन्न कर सकते हैं. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा.

मीन आजीविका में परिवर्तन होने की संभावना. दूर की यात्रा के योग बन सकते हैं. परिवार में नये मेहमान का आगमन होगा. दैनिक समस्याओं का समाधान होगा.

शब्दपहेली 798

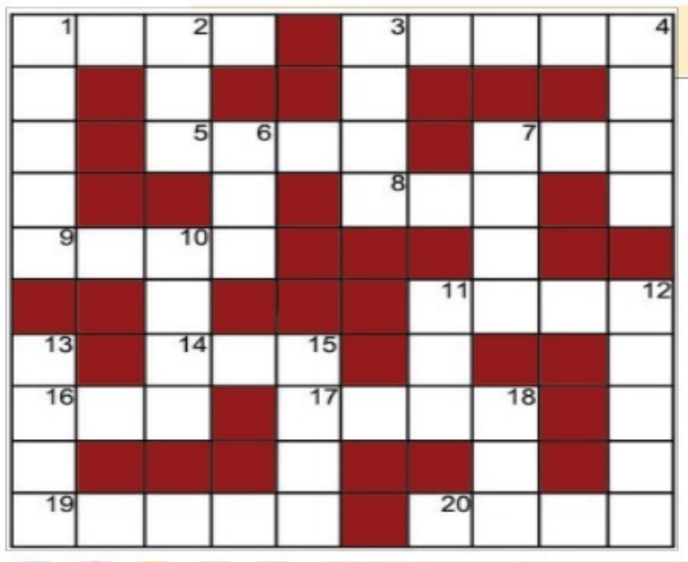

बायें से दायें

1 जल्दी चिढ़ने वाला, बात-बात पर अप्रसन्न होने वाला (4)
3 माथा-पच्ची करना, अधिक सोच-विचार करना (2,3)
5 नीला वस्त्र पहनने वाला (4)
7 प्रलय, लोप, नाश, घुलना (3)
8 कचहरी का एक कर्मचारी, निरीक्षक (3)
9 उम्दापन, सुंदरता (4)
11 जिसकी चाह न हो (4)
14 आगे के लिए टाला हुआ (3)
16 लोभ, लोलुपता (3)
17 लिखने की मसि, स्याही (4)
12 स्वीकार करना (2,3)
13 कलापूर्ण, कलाकारी से युक्त (4)
15 वीरों के लिए जो उचित कार्य माना जाता है (4)
18 सच्चाई, नीयत (3)

शब्दपहेली उत्तर

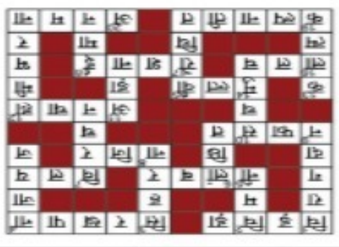

सुडोकू नवताल

पहेली नंबर 4187

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	9	5	6	3	2	1
4	7	2	1	6	8	5	3	9
1	3	9	5	4	2	8	7	6
5	8	6	7	3	9	2	4	1
6	2	8	4	7	1	9	5	3
9	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	4	8	5	3	1	6	4

MANGAL SENACHA BANGALORE

सुडोकू नवताल - 4186 का हल

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	7	4	3	5
6	4	5	2	8	3	7	1	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	9	5	7
9	3	2	8	4	6	1	7	5
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3

ऊपर से नीचे

1 चिराग या दीया रखने का आध
2 फैक्टरी आदि में से धुआं आ
वाली नली (3)
3 रोंगटे खड़े होना, ठंड से कांप
4 अनुचित, जो जायज न हो (4
6 कलंकित, दागदार (3)
7 निर्माण बनाना (4)
10 यथार्थ में, वस्तुतः, वास्तव में,
11 रोकना, आड़ देना, सहारा दे
लगाना (3)
19 कल्पना से परे (5)
20 खिन्न, उदास, रोगी (4)